

शास्त्राचार्य

1.229

SHA ARCHIVES



(प्रितत् ॥ त्रंङींहीं हूं ह्रौं अरुमगुलाकातयादि ॥ ॥ यमासाययाइकां ॥
अद्यपाशासाय ३ ॥ ॥ यास ॥ अतककायदृट् ॥ त्रं कनिहि कायेनम ॥ ॥ डी
अनासिकायसाहा ॥ श्रीम(धमायवोषट् ॥ त्रं नरुं सायदं ॥ ह्रौं अरुका
यवषट् ॥ त्रं अमुयदृट् ॥ त्रं ददयायनम ॥ ॥ डी निवससाहा ॥ श्री
निखायवोषट् ॥ ह्रौं कववायदं ॥ ह्रौं नपुण्यायवषट् ॥ त्रं अ

दृट् ॥ ॥ अर्चयागसायनम ॥ त्रं ददयादि सतंगवपूजा ॥ ॥ अरुका
का ॥ (धनू ॥ आत्मसिद्ध ॥ आत्मसिद्धवन्दनं नम ॥ ॥ यर्थ ॥ आत्मा
सायनम ॥ आत्ममूर्तनम ॥ ॥ उं अरुकासाय २ ॥ उं डीं ससूर्याय २ ॥ ३ ॥
ने ॥ उं डीं पुकागिहकि सहिताय २ ॥ ३ ॥ ॥ आवाय ॥ य ॥ डीं १० ॥ ॥
यास ॥ उं डीं गरुणसाय २ ॥ उं डीं नागायनाय २ ॥ ३ ॥ ॥ ने ॥ उं डीं

श्रीगणेशसहिताय २॥३॥ ने ॥ आवाक ॥ जय ज्ञो ॥ आस ॥ उं ज्ञो वृ
स्त्राय २॥ उं ज्ञो अद्यानाय २॥३॥ ने ॥ उं ज्ञो अद्याने गणेशसहिताय २॥
३॥ ने ॥ आवाक ॥ जय ज्ञो ॥ ॥ आस ॥ उं शं स ४ वृषास्त्राय २॥ उं
शं स ४ मृत्पुंज्याय २॥३॥ ने ॥ उं शं स ४ लक्ष्मीगणेशसहिताय नमः ॥३॥
॥ ने ॥ आवाक ॥ ४ जय शं स स्त्राय ॥ ॥ मण्डल कवी ॥ स्त्राय

सूर्याय दवाय भाद्र धकाल मगनां । जनानां ग्यानलक्ष्मी कृतम् ॥
जननं नो मिथी सूर्य राक्षस ॥ जन गत्यादि ॥ श्री सूर्याय नाना यनाय
अद्यान मृत्पुंज्याय ननु ननु निवाचन विधित सर्वं यत्रियूर्ध्वं म
मु ॥ कवी नक्षत्र ॥ आसत्रिकाय ॥ ज्ञो हृदयाय नमः ॥ ज्ञो आच मन
स्त्राय ॥ ५ अस्त्राय रुट् ॥ ॥ निलिङ्गार्चन ॥

॥ छिन्नत्वं ॥ उन्नतमस्कात्र ॥ त्रैलोक्यं अखण्डमनुलायादि ॥ उन्नतका स्यादि ॥
यद्वासाय यादकां ॥ जलपात्रासाय ३ ॥ अर्घ्यपात्रासाय ३ ॥ कर्मासाय
॥ आत्मासाय ३ ॥ धवके आस ॥ किंविद्विचैकां कथय ४ ॥ अस्माय ह
ट् ॥ २ ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥
हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ ॥ आस ॥ यश्च पुण्यव ॥ जलपात्रासाय ३ ॥ त्रैलोक्यं हट्

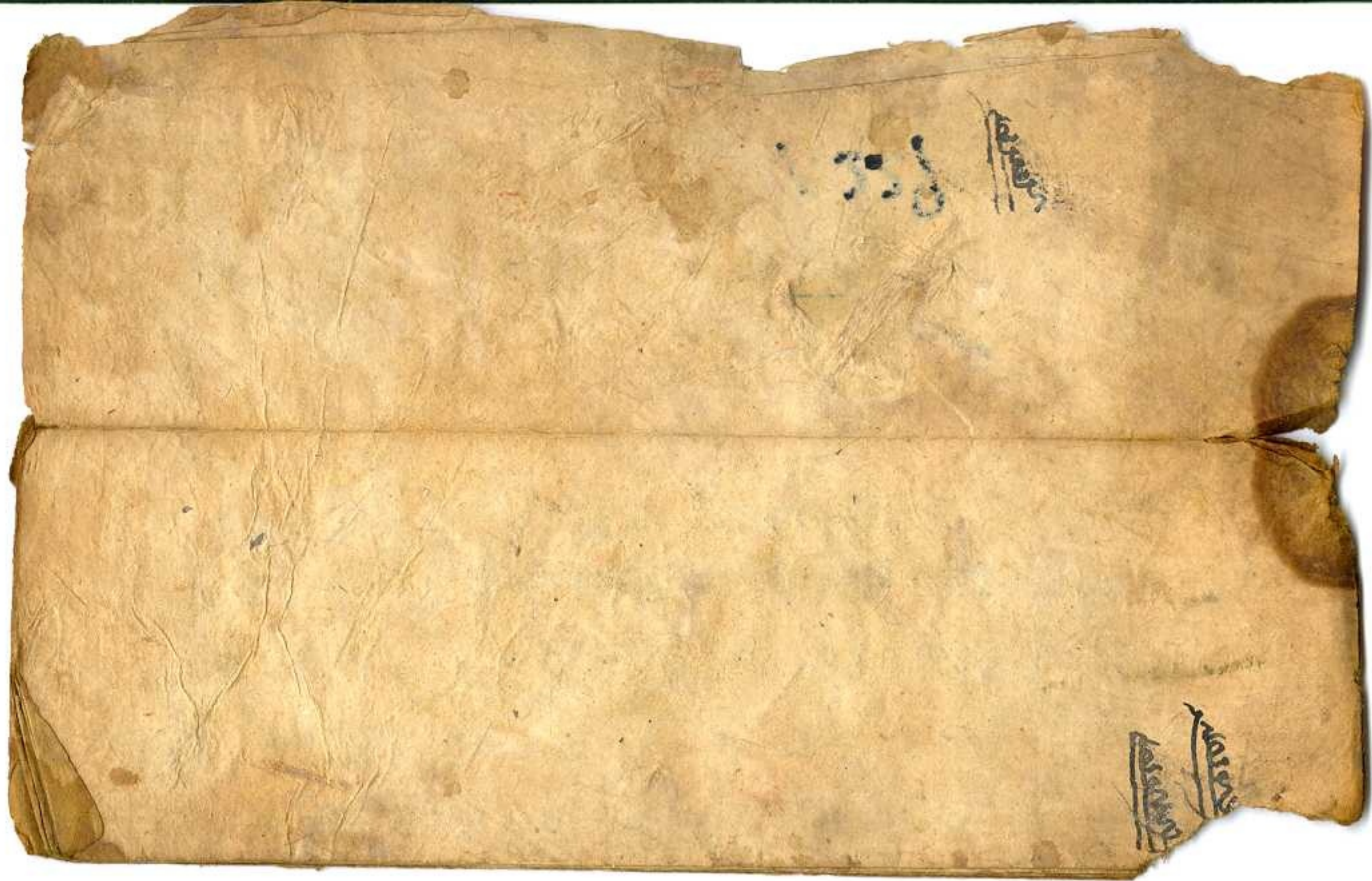
जलपात्रासाय ३ ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥
त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥
॥ ॥ अर्घ्यपात्रासाय ३ ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥
यद्वासाय यादकां ॥ जलपात्रासाय ३ ॥ अर्घ्यपात्रासाय ३ ॥ कर्मासाय
॥ आत्मासाय ३ ॥ धवके आस ॥ किंविद्विचैकां कथय ४ ॥ अस्माय ह
ट् ॥ २ ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ त्रैलोक्यं हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥
हट् वज्रपञ्चलस्याह ॥ ॥ आस ॥ यश्च पुण्यव ॥ जलपात्रासाय ३ ॥ त्रैलोक्यं हट्

नमो हनि ३ ॥ श्री नाना चक्र पूर्ण पाद कां ॥ कर्म पाद कां ॥ ३ सिंह
चक्र ॥ ॥ श्री समस्त नमो वाहन ॥ गेंग श्रृं नन के मनुष्यी आदि
देव पाद कां ॥ वलि ॥ ननाः मय् मृग ॥ कां कुरुपालाय पाद कां
॥ वलि ॥ श्री जीवतु काय ३ ॥ वलि ॥ (सों ग व फ य ३ ॥ वलि ॥ आवा
॥ ॥ रजनी दधु ग ज मूडा ॥ ॥ यक्षा ३ ॥ गेंग श्रृं व र

॥ श्रृं न क पाद के लो ३ ॥ वलि ॥ गेंग हं र सं र न वात्मा पाद का
लि ॥ ॥ वषा ॥ सिंह ॥ गेंग हं र सं र य म्मि म मूल स्थान पाद का ३ ॥
षउ ३ ॥ वलि ॥ श्री वाक् ॥ सिंह साय ३ ॥ उं जी श्रृं न जय दे ३ ॥
वलि ॥ म हा य ना स ॥ न वा क त्रि ॥ वि धा ॥ षउ ३ ॥ वलि ॥ उं दे मि
वास ॥ षउ ३ ॥ न वा क त्रि ॥ वि धा ॥ षउ ३ ॥ वलि ॥ ॥ हं सा वषा

[Faint, illegible text]	
1.229	

ASHA ARCHIVES



कौ १० ॥ ऐं ॥ ह्रूं ॥ मूं ॥ हूं ॥ मूं ॥ हूं ॥ मूं ॥ उं ॥ त्रै ॥ न वा क
नी ॥ धा ॥ उ ॥ म ॥ क ॥ नी ॥ ॥ मूलया ॥ मालका ॥ ह्रूं ॥ उ ॥ ईया ॥ ॥
दं ॥ ज ॥ यं ॥ ग ॥ ह ॥ न ॥ स्या ॥ हा ॥ ॥ मं ॥ गु ॥ ल ॥ क ॥ वा ॥ ज ॥ ॥ ॥ स्मृ ॥ ॥ अ ॥ र ॥
उ ॥ म ॥ उ ॥ ला ॥ ॥ धी ॥ स ॥ म्भ ॥ ना ॥ ॥ उ ॥ का ॥ रा ॥ ॥ स्या ॥ ॥ उ ॥ ॥ हं ॥ ॥ मा ॥ ॥ ज ॥ ध ॥ नै ॥ वा ॥ य ॥ रा
॥ मं ॥ क ॥ व ॥ चं ॥ र ॥ व ॥ तु ॥ वा ॥ न ॥ मं ॥ ॥ द ॥ व ॥ वी ॥ धा ॥ ना ॥ नां ॥ ॥ धा ॥ नि ॥ र ॥ व ॥ तु ॥ वा ॥ न ॥ मं ॥

अस्मत् नित्यं कृम्यदवार्चनपूजानिमित्वा धनं गुरुदलवलद
यिनारुवंतु ॥ अनृत्यादि ॥ ॥ तर्प्यं ॥ धी ॥ ग ॥ कान ॥ क ॥ र ॥ व ॥ नि
मूर्ति ॥ ज ॥ ग ॥ नि ॥ पू ॥ र्ण ॥ व ॥ त्री ॥ रा ॥ स्य ॥ त्री ॥ ॥ अ ॥ म्भ ॥ पू ॥ र्ण ॥ ग ॥ नं ॥ य ॥ नै ॥ र ॥ ग ॥ व ॥ नि ॥ त्ते
न शयूपात्मिके ॥ स्नानकाकाय ॥ कि नि ॥ र ॥ वि ॥ र्च ॥ का ॥ क ॥ भा ॥ य ॥ क ॥ अ
क्रायदृष्ट ॥ ॥ लं ॥ ॥ नि ॥ ग ॥ क ॥ ॥ र ॥ स्या ॥ हा ॥ ॥ अ ॥ र्घ ॥ पा ॥ तु ॥ लं ॥ ख ॥ न ॥ हा ॥ य ॥ ॥ कि नि ॥ र ॥

॥ कलताल छियं, हां हन मूडान विमर्जन ॥ ह्रीं हूं ह्रीं ह्रीं ॥
ह्रीं आचमन नमस्वाहा ॥ साक्षि आय ॥ अस्मन् नित्य कर्म देवा
ई नमः पूर्ण निमित्ता (थ) ह्रीं ह्रीं ह्रीं साक्षि (ह) नमः ४ पर्यं नमः ४ ॥
ग्रा साक्षि कार ॥ ह्रीं ह्रीं दयाये २ ॥ ह्रीं आचम (ह) नमस्वाहा ॥ ५ ४
अस्माये हृद् ॥ निमात्य च गुना धाय नमः ४ ॥ ॐ नित्य कर्म विधि

२०८ मार्ग छिन्न कृष्ण ८ अंग वाखन संपूर्ण त्रिषित कर्माचार्य आनन्द

आशा आर्कवाइव

1.229

ASHA ARCHIVES

आशा आर्कवाइव